हरिशंकर परसाई

- **जन्म** : 22 अगस्त 1924 ।
- **निधन** : 10 अगस्त 1995 ।
- **जन्म-स्थान** : गाँव-जमानी, जि० -होशंगाबाद, मध्य प्रदेश ।
- **शिक्षा** : एम. ए. (हिंदी), नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर । डिप्लोमा इन टीचिंग । स्पेंस ट्रेनिंग कॉलेज, ज़बलपुर से शिक्षक के रूप में दो वर्षों का प्रशिक्षण ।
- **वृत्ति** : खंडवा में अध्यापन, मॉडल हाई स्कूल, जबलपुर में सन् '43 से 52' तक अध्यापन । सन् '53 से 57' तक प्राइवेट स्कूलों में अध्यापन । सन् '57 से स्वतंत्र लेखन ।
- **संपादन** : सन् 1956 से 59 तक जबलपुर में 'वसुधा' नामक पत्रिका का संपादन ।
- **सम्मान** : साहित्यिक अवदान के लिए जबलपुर विश्वविद्यालय से डी. लिट. की मानद उपाधि । साहित्य अकादमी पुरस्कार (1982), अनेक अन्य पुरस्कारों से सम्मानित ।
- **यात्रा** : 'विश्व शांति सम्मेलन' में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में 1962 में सोवियत रूस की यात्रा ।
- **कृतियाँ** : हँसते हैं- रोते हैं, भूत के पाँव पीछे, तब की बात और थी, जैसे उनके दिन फिरे, सदाचार का ताबीज, पगडंडियों का जमाना, वैष्णव की फिसलन, पाखंड का अध्यात्म, सुनो भाई साधो, विकलांग श्रद्धा का दौर, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, निठल्ले की डायरी आदि । संपूर्ण रचनाएँ 'परसाई रचनावली' नाम से छह खंडों में राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित । अंग्रेजी, उर्दू, मलयालम, मराठी, बंगला आदि में अनेक रचनाएँ भाषांतरित ।

स्वातंत्र्योत्तर भारत के अप्रतिम व्यंग्य शिल्पी, कथाकार और पत्रकार हरिशंकर परसाई मूलतः व्यंग्यकार हैं, कथा और पत्रकारिता, सर्वत्र । वे अपनी विलक्षण व्यंग्य प्रतिभा, गहरी और व्यापक रूप से प्रतिबद्ध रचना दृष्टि, सजग-सोद्देश्य रचनाधर्मिता आदि लेखकीय गुणों के कारण आजादी के बाद के भारत के प्रमुख लेखक हैं । साहित्य की समाजनिष्ठा और उद्देश्यपरकता के साथ ही जनप्रियता के कारण भी प्रायः प्रबुद्ध लोगों के द्वारा उनकी तुलना प्रेमचंद से की जाती रही है । महत् लोक उद्देश्यों के साथ सक्रिय होनेवाली बहुमुखी व्यंग्य दृष्टि के कारण कबीर से भी की जाती रही है । नागार्जुन और परसाई दोनों को 'आधुनिक कबीर' कहा जाता रहा है । स्वयं नागार्जुन की परसाई पर लिखी गई कविता परसाई के व्यंग्यकार व्यक्तित्व पर एक दुर्लभ समग्र टिप्पणी है ।

हरिशंकर परसाई ने उत्तरशती के उत्तरोत्तर जनविरोधी होते जाते पाखंड पूर्ण सत्ताचारी राजनीतिक चरित्र को अपने आक्रामक व्यंग्य का निशाना खासतौर से बनाया है । उन्होंने धर्म, संस्कृति, व्यापार-वाणिज्य,

नौकरशाही, सामंती मनोवृत्ति आदि विविध क्षेत्रों के साथ ही अंधविश्वास, कुरीति, जाति व्यवस्था, अकर्मण्यता, अशिक्षा आदि नाना प्रकार के उन कुसंस्कारों पर भी विचलित करने वाले तीव्र व्यंग्य प्रहार किए हैं जो हमारे सामाजिक जीवन में अवरोधक बनकर अभी भी जमे हुए हैं। परसाई महज प्रवृत्तियों पर अमूर्त रूप में निशाना नहीं साधते, वे उन प्रवृत्तियों के संवाहक समाज और व्यवस्था के उन ठोस चरित्रों को भी बेपर्द करते हुए सामने लाते हैं; कुछ इस तरह कि उन्हें पहचानना कठिन नहीं रह जाता। कहना न होगा कि हमारे इर्द-गिर्द के सुपरिचित यथार्थ सामाजिक जीवन-जगत से उठाए गए ये चरित्र एक नई रोशनी में पहचान में आ जाते हैं, इनकी सामाजिक-राजनीतिक या कहें, सार्वजनिक भूमिका वास्तविक रूप में उघड़कर सामने आ जाती है।

हरिशंकर परसाई के पास एक गहरी ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि, वैज्ञानिक विवेक, उत्कट यथार्थबोध और मानवीय संवेदना थी जिसके सहारे वे अपने व्यंग्यास्त्रों द्वारा सिर्फ बाहरी ही नहीं, भीतरी लड़ाई भी लड़ते रहे। धर्म, संस्कृति, समाज, राजनीति आदि उनकी बाहरी लड़ाई के क्षेत्र थे तो युगों से जमे हुए रुँधे संस्कार, अंधविश्वास, पिछड़ी सोच और मानसिकता भीतरी क्षेत्र।

यहाँ संकलित रचना 'परसाई रचनावली' (खंड 4) से ली गई है और राजनीतिक नेताओं पर तथा उनके बहाने उस राजनीति पर चौतरफा व्यंग्य कर रही है जो शिक्षा-संस्कृति के साथ ही जीवन-जगत के सभी व्यवहार क्षेत्रों को अपना चारागाह समझती है।

◆ ◆ ◆

परसाई के व्यंग्यबाण

छूटने लगे अविरल गति से
जब परसाई के व्यंग्य-वाण
सरपट भागे तब धर्मध्वजी
दुष्टों के कंपित हुए प्राण

धृतराष्ट्र दुखी होंगे, नकली
भीमों का होगा अ-कल्याण
सदियों तक कुंद नहीं होंगे
गुरु परसाई के वचन-वाण

बहुजन-हित-व्रत की आँचों में
यह शिल्प पगा, ये तीर ढले
परसाईवाली पीढ़ी के
युगजीत चले, प्रणवीर चले

रवि की प्रतिमा को नमस्कार
शनि की प्रतिमा को नमस्कार
वक्रोक्ति विशारद, महासिद्ध
हरि की प्रतिमा को नमस्कार

-नागार्जुन

एक दीक्षांत भाषण

(विश्वविद्यालयों के दीक्षांत समारोहों का मौसम चल रहा है। एक विश्वविद्यालय में एक मंत्री का दीक्षांत भाषण मैंने भी सुना। भाषण ज्यों-का-त्यों यहाँ दे रहा हूँ।-ले०)

प्यारे विद्यार्थियो,

इस समारोह में छात्रों से ज्यादा पुलिस के सिपाही देखकर मेरा मन आनंदित हो उठा। देखिए सिर्फ बीस वर्षों में हमने कितनी प्रगति कर ली। दुनिया में बहुत पुराने विश्वविद्यालय होंगे, पर वहाँ भी एक छात्र के पीछे एक पुलिस मैन नहीं हो पाया। शासन को तो इस प्रगति का श्रेय है ही, आप लोगों को भी कुछ श्रेय है। मैं तो उस दिन की कल्पना कर रहा हूँ, जब आप लोगों में से हरेक के बाथरूम में एक सिपाही होगा। अगर शासन और छात्रगण परस्पर सहयोग करते रहे और दोनों ने प्रयत्न किए तो वह दिन दूर नहीं है जबकि उपकुलपति के आसन पर पुलिस थानेदार विराजमान होगा। आप इस दिशा में जो प्रगति कर रहे हैं, उसकी मैं प्रशंसा करता हूँ। शासन इस दिशा में जो करता है वह आप जानते ही हैं। विश्वविद्यालय और पुलिस को निकट लाने के लिए शासन पूर्ण प्रयत्न करेगा–यह आश्वासन मैं इस पवित्र अवसर पर आपको देता हूँ।

प्यारे छात्रो, आप तो अभी से हल्ला-गुल्ला और हूटिंग करने लगे। इतने उतावले मत होइए। मैंने अपनी सुविधा के लिए भाषण में हूटिंग के उपयुक्त कई स्थल रखे हैं। उन्हें आने दीजिए और तब मुक्त मुख से हूट कीजिए।

मैं आपको बतला दूँ कि मैं कोई विद्वान या महापुरुष नहीं हूँ। प्रश्न उठता है कि फिर मैं दीक्षांत भाषण के लिए क्यों बुलाया गया? जवाब साफ है। मैं अगर इस बार भी न बुलाया जाता तो ग्रांट रुकवा देता। तब आप लोगों का पढ़ना बंद हो जाता। आपका भविष्य अंधकारमय न हो, यही सोचकर मैं दीक्षांत भाषण देने आ गया हूँ। आप लोग फिर शोरगुल करने लगे। आप शायद हूटिंग के मूड में आ गए हैं। मैं इसका बुरा नहीं मानता। इससे तो अभ्यास ही बढ़ता है। हम आजकल हर जगह हूटिंग का सामना करना पड़ता है। अपढ़ जनता की हूटिंग से मैं ऊब उठा हूँ। आप जैसे शिक्षित नवयुवक मुझे हूट कर रहे हैं यह काफी 'रिफ्रेशिंग' लग रहा है। फिर यह मेरे लिए गौरव की बात है कि इस वक्त जब मेरे साथी, दूसरे साथी, दूसरे मंत्री, गवर्नर लोगों के द्वारा हूट हो रहे होंगे, मैं एक विश्वविद्यालय में हूट हो रहा हूँ। इससे मेरा स्तर बढ़ता है।

शोरगुल, आवाजकशी और हूटिंग के मामले में मैं आप लोगों की क्षमता जानता हूँ। मैंने

कोयल से पूछा था, 'बहन जी, आप पेड़ों पर बैठी क्यों गाती हैं ?' उसने कहा, 'पहले मैं में गाती थी, पर विश्वविद्यालय के लड़कों ने हूट करके भगा दिया । इसीलिए पेड़ पर बैठकर गाना पड़ता है ।' मैं यह भी जानता हूँ कि मोर पहले यहाँ स्टेज पर नृत्य करता था । पर आप लोगों ने कंकड़ मारकर उसे भी जंगल में भगा दिया । मैं जानता हूँ कि मेरी जगह पर अगर बृहस्पति भी भाषण देते तो वे भी हूट कर दिए जाते । आपके उपकुलपति उन्हें आमंत्रित करके देखें । मैं दावे से कहता हूँ कि वे यहाँ आने से इनकार कर देंगे । यह तो मेरा ही कलेजा है, जो बोले जा रहा हूँ । मेरे साहस का कारण यह है कि मैं बृहस्पति की तरह ज्ञानी नहीं हूँ । ज्ञानी कायर होता है । अविद्या साहस की जननी है । आत्मविश्वास कई तरह का होता है—धन का, बल का, ज्ञान का । मगर मूर्खता का आत्मविश्वास सर्वोपरि होता है ।

अब आप मंच पर कंकड़ फेंकने लगे हैं । मैं इस कार्यक्रम की तुलना जब पश्चिम के ऐसे ही कार्यक्रम से करता हूँ तो मेरा मन भर उठता है । पश्चिम में ऐसे मौके पर अंडे फेंके जाते हैं । पर हाय ! भारतमाता के इन लोगों को कंकड़ फेंकना पड़ता है । वे अंडे नहीं खरीद सकते । देश की आर्थिक दुर्दशा का इससे बड़ा सबूत और क्या होगा कि हमारे होनहार नौजवान वक्त पर फेंकने के लिए अंडे नहीं खरीद सकते । पर मैं आपसे कहता हूँ कि आप निराश मत होइए । हम पर भरोसा रखिए । हम देश का विकास कर रहे हैं । आप जल्दी ही अंडे फेंक सकेंगे । मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने जीवन काल में आपसे नहीं तो आपके लड़कों से अपने ऊपर अंडे जरूर फिकवाऊँगा । इसके लिए चाहे मुझे सौ साल भी मंत्री क्यों न रहना पड़े ।

युवा मित्रो, आपने ताली बजाने का एक स्थल खो दिया । खैर, आगे ध्यान रखिए । मैं देख रहा हूँ कि आप में से कुछ लड़कियों के पीछे खड़े होकर बकरे की बोली बोल रहे हैं । मैं जानता हूँ, अच्छी लड़कियाँ जानवर की बोली बोलने वाले युवक से ही प्रेम करती हैं । मेरा लड़का एक लड़की के पीछे कुत्ते की बोली बोलता था । वह इतनी मुग्ध हुई कि उससे प्रेम करने लगी । अब दोनों की शादी भी हो गई है । घर में मेरा लड़का 'भौं-भौं' करता है तो बहू 'म्याऊँ' करती है । इससे परिवार का वातावरण सुखद रहता है ।

युवको, देश को आपसे बड़ी आशाएँ हैं । देश का भविष्य आपको ही बनाना है । आप पूछेंगे, 'वर्तमान का क्या होगा ?' वर्तमान की चिंता आप न करें । वर्तमान को तो हम बिगाड़ रहे हैं । यह आपके प्रति हमारा दायित्व है । यदि हम आज न बिगाड़ेंगे, तो कल आपके लिए कुछ काम नहीं रह जाएगा । तब आप निठल्ले हो जाएँगे और यह देश पतन के गर्त में गिर जाएगा ।

आप युवक हैं, क्रांतिकारी हैं । मैं आपके क्रांतिकारी आंदोलनों को बड़े ध्यान से देख रहा हूँ । जब आप बस-कंडक्टर और सिनेमा-गेटकीपर के विरुद्ध क्रांतिकारी आंदोलन करते हैं, तब मुझे बड़ी खुशी होती है । जब तक आप बस कंडक्टर और सिनेमा गेटकीपर के विरुद्ध क्रांतिकारी आंदोलन करते रहेंगे, हम सुरक्षित रहेंगे । मैं आपसे अपील करता हूँ कि इन्हीं के खिलाफ आंदोलन करते रहें । जिस दिन आप बुनियादी परिवर्तन के लिए आंदोलन करेंगे, उस दिन हम उखड़

जाएँगे। इसलिए आप सच्चे क्रांतिकारी बनें । सच्चा क्रांतिकारी कंडक्टर, गेटकीपर, चपरासी वगैरह से ही संघर्ष करता है ।

अब मैं आपको संदेश देता हूँ हर आदमी को जीवन के सत्य को पकड़ लेना चाहिए और उसके लिए हर कर्तव्य करना चाहिए । मैंने समझ लिया कि मेरे जीवन का सत्य मंत्री बनना है । इस सत्य को मैंने कभी नहीं छोड़ा । इस सत्य के लिए मैंने ईमान, धर्म सबका परित्याग किया । सत्य के लिए बड़े से बड़ा त्याग करना पड़ता है । मैंने किया, और आप जानते हैं कि सत्य मुझसे कभी नहीं छूटा । किसी भी पार्टी का मंत्रिमंडल हो, मैं जरूर मंत्री रहा । जिसका मंत्रिमंडल बना मैं उसी का हो गया । सत्य को इसी तरह दाँतों से पकड़ा जाता है । आप मेरे आदर्श पर चलें । विश्वविद्यालय के जीवन में आप यदि तय कर लें कि आपका सत्य डिग्री लेना है तो इसके लिए पेपर आउट व नकल से लेकर अध्यापक से मारपीट तक करें । सत्य से बड़ा कुछ नहीं है ।

मेरा दूसरा संदेश यह है कि आप लोग राजनीति में भाग न लें । अगर आप राजनीति में भाग लेंगे तो हमें राजनीति छोड़नी पड़ेगी । आप लोग चरित्रवान बनें । अगर आप चरित्रवान न बनेंगे, तो हमें बनना पड़ेगा—और हमारी अब चरित्रवान बनने की उम्र नहीं है । आप त्यागी बनें-आप ईमानदार बनें । आपके ईमानदार बन जाने से हम ईमानदार बनने से बच जाएँगे । वरना हमें इस ढलती उम्र में ईमानदार बनना पड़ेगा । इसमें कितना क्लेश होता है, इसे आप कच्ची उम्र के लड़के नहीं समझ सकते । मेरी इच्छा है कि आप देश के सच्चे सपूत बनें । अगर आप नहीं बनेंगे तो हमें बनना पड़ेगा और हमारे सच्चे सपूत बनने की उम्र नहीं रही । तरुण मित्रो, देश को आपका ही भरोसा है । आप पर देश भरोसा नहीं करेगा तो उसे फिर हम पर ही भरोसा करना होगा और यह उसके लिए अच्छा नहीं होगा ।

तरुण मित्रो, आपको यह विदित ही है कि समारोह में मुझे भी आपके साथ कानून की डाक्टरेट बिना किसी इम्तिहान के पास किए ससम्मान मिल रही है । यह बड़ी स्वस्थ परंपरा है कि जो परीक्षा पास न करे उसे सम्मानपूर्वक डिग्री मिल जाए । आज मैं भी आपकी तरह छात्र हो गया हूँ । मेरे मन में छात्र जीवन की सुखद स्मृतियाँ जाग उठी हैं । किसी कवि ने कहा है कि – 'अहा, छात्र जीवन भी क्या है, क्यों न इसे सबका मन चाहे ।' डॉक्टर बनने की इच्छा मेरी बचपन से ही थी, पर अक्ल ने साथ नहीं दिया । यह इच्छा आज पूरी हो रही है । मैं जानता हूँ कि यदि मैं मंत्री न होता तो कानूनी डॉक्टर क्या, कंपाउंडर भी मुझे कोई न बनाता ।

ओ३म् शांति ! शांति ! शांति !

□□□

अभ्यास

पाठ के साथ

1. दीक्षांत समारोह में नेता जी का मन क्या देखकर आनंदित हो उठा ?
2. विश्वविद्यालय में शूटिंग होने पर भी नेता जी खुश क्यों हैं ?
3. 'ज्ञानी कायर होता है । अविद्या साहस की जननी है । आत्मविश्वास कई तरह का होता है – धन का, बल का, ज्ञान का । मगर मूर्खता का आत्मविश्वास सर्वोपरि होता है ।' इस कथन का व्यंग्यार्थ स्पष्ट कीजिए ।
4. नेता जी के अनुसार वे वर्तमान को बिगाड़ रहे हैं ताकि छात्र भविष्य का निर्माण कर सकें । इस कथन का व्यंग्य स्पष्ट करें ।
5. नेता जी ने सच्चे क्रांतिकारियों के क्या लक्षण बताए हैं ?
6. 'सत्य को इसी तरह दाँतों से पकड़ा जाता है ।' इस कथन से नेता जी का क्या अभिप्राय है ?
7. 'मैं जानता हूँ कि यदि मैं मंत्री न होता तो कानूनी डॉक्टर क्या कंपाउंडर भी मुझे कोई न बनाता ।' इस पंक्ति की सप्रसंग व्याख्या करें ।
8. पाठ का अंत 'ओ३म शांति ! शांति ! शांति !' से हुआ है । आपके विचार से लेखक ने ऐसा प्रयोग क्यों किया है ? क्या इसका कोई व्यंग्यार्थ भी है ? लिखिए ।
9. देश की आर्थिक अवस्था पर व्यंग्य करने के लिए लेखक ने क्या कहा है ?

पाठ के आस-पास

1. दीक्षांत समारोह क्यों आयोजित किया जाता है ? इसके महत्त्व पर अपने शिक्षक से चर्चा करें ।
2. हरिशंकर परसाई हिंदी के श्रेष्ठ व्यंग्यकार हैं । देश की राजनीतिक व्यवस्था पर उन्होंने तीखे व्यंग्य किए हैं । उनके व्यंग्य पढ़ें और अपने मित्रों से उस पर चर्चा करें ।
3. परसाई जी के व्यंग्य का मंचन किया जाता रहा है । प्रस्तुत व्यंग्य पाठ का मंचन करें ।
4. विश्वविद्यालय परिवेश में पुलिस का होना उचित है या अनुचित । आपका क्या विचार है ?

भाषा की बात

1. इस पाठ में अंग्रेजी के कई शब्द आए हैं । उन्हें चुनकर लिखें और शब्दकोश की सहायता से उनका हिंदी अर्थ लिखें ।
2. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह करें –
   शोरगुल, हल्ला-गुल्ला, बस-कंडक्टर, नवयुवक
3. 'अहा! छात्र जीवन भी क्या है, क्यों न इसे सबका मन चाहे !' यह [illegible] मयवाचक वाक्य है । विस्मयवाचक वाक्य के पाँच अन्य उदाहरण दें ।
4. 'अहा ! छात्र जीवन भी क्या है, क्यों न इसे सबका मन चाहे ? यह [illegible] पैरोडी है । मैथिलीशरण गुप्त की मूल कविता पंक्ति है – 'अहा ! ग्राम्य जीवन भी क्या है ? थोड़े में निर्वाह यहाँ है ।' –ऐसी कुछ पैरोडियाँ आप इकट्ठी करें ।

शब्द निधि

दीक्षांत : दीक्षा का अंत, पढ़ाई कार्य संपन्न होना
आवाजकशी : तरह-तरह की आवाजें और फिकरे कसना
अविद्या : अज्ञान
सर्वोपरि : सबके ऊपर
गर्त : खाई, गड्ढा
क्लेश : कष्ट, दुख
हूटिंग : शोर-गुल करते हुए बहिष्कार करना
रिफ्रेशिंग : नया, तरोताजा